# ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

ओ३म् क्रतो स्मर ।


| | | |
|---|---|---|
| वर्ष–6, अंक–4 | दिसम्बर 2012 | मार्गशीर्ष |
| सृष्टि संवत् 1960853113 | विक्रमी संवत् 2069 | दयानन्दाब्द 189 |


आर्य पुरुषो ! आचार शुद्धि में मन से लग जाओ, तब तुम 'आर्यपद' ग्रहण करने की ओर चल सकोगे, और न केवल अपना ही इहलोक और परलोक सुधार सकोगे अपितु अपने पड़ोसियों को भी बिना अपना मुख खोले, वैदिक धर्म की शरण में ला सकोगे।

–स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती


*सम्पादक*

**मूलचन्द गुप्त**



ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

ओ३म्

# ओ३म्-सुप्रभा

**वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका**

• *परामर्श*

**डॉ० धर्मपाल आर्य**

**(पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)**

ए/एच-16, शालीमार बाग,
दिल्ली-110088
दूरभाष-011-27472014
011-27471776

• *सम्पादक*

**मूलचन्द गुप्त**

**(पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली)**

• *प्रकाशक*

**मूलचन्द गुप्त,**
*अध्यक्ष,* **ओम्-प्रतिष्ठान**
कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर,
पंखा रोड, नई दिल्ली-110045
दूरभाष-9650886070
011-25394083

ई-मेल-Ompratisthan@gmail.com

ओ३म्-सुप्रभा में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। वे विचार लेखक के अपने हैं।

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं० 17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया। न्यायक्षेत्र-दिल्ली

## उद्देश्य

- ✧ वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता का पोषण करना, वैदिक विचार-धारा के अनुसार मानव-निर्माण करना, समरस और समेकित समाज का संगठन करना, विश्व भर में सुख और शान्ति की स्थापना करने का प्रयास करना **ओम्-प्रतिष्ठान** का मुख्य उद्देश्य है।
- ✧ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विभिन्न बहुआयामी गतिविधियों का संचालन किया जाएगा।
- ✧ रचनात्मक और प्रेरक साहित्य का सृजन, प्रकाशन और प्रसारण का, इन गति-विधियों में प्रमुख स्थान होगा।
- ✧ इस पत्रिका में समय-समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक चेतना जागृत करने से सम्बन्धित विषयों पर मौलिक लेख तथा समाचार प्रकाशित किए जायेंगे।
- ✧ **ओ३म्** परमपिता परमात्मा का निज नाम है। परमात्मा इस सृष्टि का नियन्ता है। सृष्टि से सम्बन्धित सभी विषयों का इसमें समावेश किया जाएगा।
- ✧ **ओ३म्-सुप्रभा** का प्रकाशन पूर्णतया निजी स्तर पर किया जा रहा है। उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रति मास देश-विदेश के आर्य विद्वानों, लेखकों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रकाशकों एवं संस्थाओं को ओ३म्-सुप्रभा **निःशुल्क** भेजी जा रही है।
- ✧ लघु-पत्रिका के कारण, प्रकाशनार्थ लेख न भेजें।
- ✧ सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करते रहें।

# ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

*रचना, स्थिति और प्रलय, कर्मों का फल जिस का विधान है ।*
*ओ३म् सुप्रभा ज्ञान अनुपम, सुरभित जिस से जन कुसुम प्राण है ।।*

वर्ष–6, अंक–4 | दिसम्बर 2012 | मार्गशीर्ष
सृष्टि संवत् 1960853113 | विक्रमी संवत् 2069 | दयानन्दाब्द 189


## ओ३म्-महिमा

## एष वै यज्ञमानस्य लोकः

*–महात्मा नारायण स्वामी*

अथ जुहोति नम आदित्येभ्यश्च देवेभ्यो दिविक्षिद्भ्यो लोकक्षिद्भ्यो लोकं मे यजमानाय विन्दत ॥

एष वै यजमानस्य लोक एताऽस्म्यत्र यजमानः परस्तादायुषः स्वाहाऽपहत परिघमित्युक्त्वोत्तिष्ठति ॥

तस्मा आदित्याश्च विश्वे च देवास्तृतीयं सवनं सम्प्रयच्छन्त्येष ह वै यज्ञस्य मात्रां वेद य एवं वेद य एवं वेद ॥

(छान्दोग्य उपनिषद् 2.24.11-16)

*अर्थ*–(अथ, जुहोति) इसके बाद वह हवन करता है । (आदित्येभ्यः च) आदित्यों को, (विश्वेभ्यः च देवेभ्यः) समस्त देवों को, (दिवि क्षिद्भ्यः) द्युलोकस्थों, (लोकक्षिद्भ्यः) (और अन्य) लोक निवासियों को (नमः) नमस्कार होवे । (मे यजमानाय लोकं विन्दत) मुझ यजमान के लिए लोक को प्राप्त करें ॥14॥

(वै एषः यजमानस्य लोकः) निश्चित रूप से यह यजमान का लोक है। (यजमानः आयुषः परस्ताद्) में यजमान आयु के बीतने पर (अत्र) इसी लोक को (एतास्मि) प्राप्त होऊं (स्वाहा) यह उत्तम वचन कह कर (यजमान आहुति देता है) (अपहत परिधम् इति उक्त्वा उत्तिष्ठति) अर्गल को हटा दो ऐसा कह कर यजमान उठ जाता है ॥15॥

(तस्मै आदित्याः च विश्वे च देवाः तृतीयं सवनम्, सम् प्रयच्छन्ति) उस (यजमान) को आदित्य और वैश्वदेवा तृतीय सवन को देते हैं। (एषः ह वै यज्ञस्य मात्रां वेद यः एवं वेद) निश्चय यही (यजमान) यज्ञ के तत्त्व को जानता है जो इस प्रकार जानता है (यः एवं वेद) हां जो इस प्रकार जानता है ॥16॥

## ओ३म् महिमा

ओ३म् ब्रह्म, विष्णु वही, रुद्र वही शुभ काम ।
इन्द्र, अग्नि, वसु, वरुण, अज उसी ब्रह्म के नाम ॥
ओ३म् सच्चिदानन्द है, नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त ।
अविनाशी अखिलेश है, न्याय दया से युक्त ॥
ओ३म् आप तो एक है, उसके नाम अनेक ।
यह रहस्य जाने वही, जिसका विमल विवेक ॥
ओ३म् वेद का विषय है, गीता का शुभ ज्ञान ।
उपनिषदों में इसी की, महिमा हुई बखान ॥
ओ३म् कर्म बिन कर करे, बिना पांव गति वान ।
सब को देखे चक्षु बिन, सुने सदा बिन कान ॥
ओ३म् उपासक थे सभी, भारत के नर नार ।
राम और घनश्याम से जग के तारन हार ॥
ओ३म् ओ३म् जपते रहें, तन मन की सुधि खोय ।
प्रेम करे, जो ओ३म् से, ओ३म् उसी का होय ॥

## कृतज्ञता

मैं श्री पं० गंगादत्त जी शास्त्री, और श्रीमान् महात्मा मनीषिराम जी (मुन्शीराम जी) मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल हरिद्वार का बड़ा कृतज्ञ हूं, जिनकी कृपा से इस पुस्तक के बनाने में और प्रकाशन करने में साहाय्य मिला है।

*–अनुवादक*

[उक्त कृतज्ञता ज्ञापन, 'योगदर्शन' जिसका आर्यभाषा में अनुवाद पं० भीमसेन शर्मा ने किया और सद्धर्म-प्रचारक प्रेस जालन्धर से सं० 1963 वि० अर्थात् सन्-1906 ई० को मुद्रित व प्रकाशित हुआ था, की भूमिका के पृष्ठ 20 पर छपा है। इसमें महात्मा मुन्शीराम जी (बाद में स्वामी श्रद्धानन्द महाराज) को 'महात्मा मनीषिराम जी' लिखकर कृतज्ञता प्रकट की है।] –लाला चतुरसेनगुप्त आर्य पुस्तकालय के सौजन्य से

# सम्पादकीय

ओ३म् सुप्रभा का दिसम्बर 2012 का अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । इस अंक में हमने यथा पूर्व 'स्मरण-अनुकरण-नमन' तथा 'आर्यसमाज चिन्तन-अनुचिन्तन' के अन्तर्गत सुधी विद्वानों के सामयिक लेख दिए हैं। इस अंक में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द पर सुधी पत्रकार महाशय कृष्णजी का प्रेरणास्पद लेख है । इसी प्रकार डी० ए० वी० आन्दोलन के क्रियाकलापों के सम्बन्ध में स्व० पद्मभूषण श्री सूरजभान जी का लेख है । इस वर्ष डी० ए० वी० विश्वविद्यालय जालन्धर भी स्थापित किया गया है । निश्चय ही वहां से वैदिक सिद्धान्तों पर अध्ययन एवं शोध होगा । हम अधिकारीयों को इस श्रेष्ठ कार्य के लिए बधाई देते हैं । इस अंक में डॉ० प्रशान्त कुमार वेदालंकार का एक लेख 'राष्ट्र निर्माण और युवक' दिया गया है । इस लेख से आर्ययुवक प्रेरणा प्राप्त करेंगे तथा वे आर्यसमाज एवं राष्ट्रनिर्माण के कार्यों से जुड़ेंगे ।

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती का बलिदान 23 दिसम्बर 1926 को हुआ था । आर्यसमाजों तथा आर्यसंस्थाओं में इस दिन समारोह आयोजित किए जाते हैं । महान् व्यक्तियों के जीवन से सदैव प्रेरणा प्राप्त होती है । उन्होंने अपने जीवन में श्रेष्ठ कार्य किए होते हैं, जो आगामी पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करते हैं । महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर की स्थापना में योगदान करके नारी जाति का विशेष उपकार किया था । महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी पर अजमेर में आयोजित समारोह में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा था कि यदि महर्षि दयानन्द सरस्वती न होते तो मेरी अनेक बहनें पढ़ने से वंचित रह जातीं । ऋषि के उपकार से हम कभी उऋण न हो पायेंगे। हमारा कर्तव्य है कि हम इस दिशा में और आगे बढ़ें ।

## गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना

स्वामी श्रद्धानन्द का यह कार्य स्वर्णिम अक्षरों में इतिहास के पृष्ठों पर अंकित है । उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की थी कि वहां से निकले स्नातक भारतीय ज्ञान-विज्ञान-संस्कृत-सभ्यता में निष्णात हों तथा वे देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति के लिए पूर्णतः समर्पित हों ।

स्वामी श्रद्धानन्द ने 1919 में जालियांवाला काण्ड के पश्चात् अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन में स्वागतोध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा था कि हमें राष्ट्रोन्नति तथा स्वाधीनता प्राप्ति के लिए उन सभी भाइयों को जोड़ना होगा

जिन्हें अस्पृश्य माना जाता है जो वंचित एवं दलित हैं । हमें युवाशक्ति को भी अपने साथ लेना होगा । इसी प्रकार दिल्ली में घण्टाघर से तथा जामामस्जिद से व्याख्यान देते हुए भी उन्होंने भातृभाव तथा आपसी सद्भाव बढ़ाने एवं युवकों को आगे आकर कार्य करने की प्रेरणा दी । स्वामी श्रद्धानन्द युगपुरुष थे ।

## भारतीय शुद्धि सभा

स्वामी श्रद्धानन्द ने भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की थी । उनकी मान्यता थी कि जो लोग लोभ लालच के वशीभूत होकर धर्मान्तरित हो गए हैं, उनके लिए शुद्धि का डंका बजाना होगा । इस कार्य की आवश्यकता उस समय भी थी और आज भी है । यह उल्लेखनीय है कि इस कार्य के लिए उन्होंने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया था । विडम्बना यह है कि भारत वर्ष में आज भी कोई संस्था-सामाजिक अथवा धार्मिक, इस कार्य को मनोयोग पूर्वक नहीं कर रही है । धर्मान्तरण की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है । यह निर्विवाद है कि कुछ लोग भय के वशीभूत होकर धर्मान्तरित हो गए, कुछ लोग लोभ के वशीभूत होकर धर्मान्तरित हो गए; पर यह भी उतना ही सत्य है कि मध्यकाल में दलित वर्गों, वनवासी, आदिवासी वर्गों ने अपने आपको उपेक्षित समझा और वे धर्मान्तरित हो गए । आज भी विदेशी ताकतें धर्मान्तरण में लगी हुई हैं । वे योजनाबद्ध रूप से यह कार्य कर रही है । द्रविड और आर्य की अवधारणा ने भी इस समस्या को बढ़ाया, जबकि अब यह पूर्णतः सिद्ध हो चुका है कि ये अलग नहीं है । भाषा वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि उत्तर भारत की तथा दक्षिण भारत की भाषाओं का एक ही स्रोत है और वह संस्कृत है । कर्णाटक में अनेक गांवों में संस्कृत बोली जाती है । केरल में पहली कक्षा से संस्कृत की पढ़ाई होती है । दक्षिण भारत के सभी हिन्दू मन्दिरों में प्रार्थना-उपासना का माध्यम संस्कृत ही है । सामाजिक सांस्कृतिक रूप में ये अलग नहीं है ।

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुलों की तरह ही पूरे देश में गुरुकुल संस्कृति विकसित किए जाने की आवश्यकता है जहां पर सभी वर्गों से आने वालों के लिए, धनी और निर्धनों के लिए समान शिक्षा तथा समान खानपान एवं समान रहन सहन की व्यवस्था हो । वैदिक प्रार्थनाओं के लोक भाषाओं में अनुवाद किए जाने की भी आवश्यकता है । जिससे सभी वेद ज्ञान को समझ सके । सभी मान्य शंकराचार्यों तथा मान्य महामण्डलेश्वरों से भी निवेदन है कि वे कर्म क्षेत्र में उतरें तथा धर्मान्तरण की आंधी को रोकें और जो भाई किसी भी कारण वश धर्मान्तरित हो गए हैं उनके पुनरावर्तन को प्रोत्साहन दें ।

हम स्वामी श्रद्धानन्द को याद करना चाहते हैं तो हमें पुनः शुद्धि का डंका बजाना होगा तथा सभी को सम्मान देना होगा, यही वास्तव में सामाजिक न्याय है ।

—सम्पादक 9650886070

# दलितोद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

—स्व० महाशय कृष्ण

*[ आर्यसमाज की पत्रकारिता के पुरोधा महाशय कृष्ण जी का जन्म वजीराबाद ( पाकि० ) में सन् 1880 में हुआ । आपने सन् 1906 में उर्दू साप्ताहिक ''प्रकाश'' तथा सन् 1919 में दैनिक ''प्रताप'' का प्रकाशन किया। देश-विभाजन के पश्चात् से लेकर मृत्यु-पर्यन्त दिल्ली में रहकर आप ''वीर प्रताप'' तथा ''वीर अर्जुन'' के माध्यम से आर्यसामाजिक विषयों पर लिखते रहे । आप वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा परोपकारिणी सभा के प्रधान रहे । आपका निधन 24 फरवरी, सन् 1963 को हुआ । –सम्पादक ]*

मैंने पहली बार शहीद श्रद्धानन्द के उस समय दर्शन किये जबकि मैं कालेज का विद्यार्थी था । उनसे मिलकर मेरे हृदय में उनके लिये जो श्रद्धा उत्पन्न हुई वह बढ़ती ही गई । उसका कारण यह था कि उनके तप और त्याग के जीवन में वृद्धि होती गई और मेरी ही नहीं अपितु हमारे आर्य जगत् की श्रद्धा बढ़ती गई । 1901 या 1902 से लेकर 1926 तक जब उनका बलिदान हुआ तक मुझे उनके चरणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । उनका जीवन आदर्श जीवन तो था ही उसके साथ भरपूर भी था । उनके सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि वे बड़े भाग्यवान थे । आर्यसमाज में जो यश उन्हें प्राप्त हुआ है वह किसी और को नहीं हुआ । यह इसलिये कि आर्यसमाज ने सुधार की ओर जो पग उठाया । उनके द्वारा वे उस प्रत्येक आन्दोलन के जिससे आर्यसमाज के यश में वृद्ध हुई, अगुआ थे । दूसरों को उपदेश देने की अपेक्षा उन्होंने प्रत्येक सुधार में आर्यजनता का पथ प्रदर्शन किया । उनकी धर्मपत्नी का देहान्त उस समय हुआ जबकि वे केवल 32 वर्ष के थे । किन्तु उन्होंने दूसरा विवाह का चिन्तन न किया । उन्हें यह सौभाग्य प्राप्त है कि उन्होंने सबसे पहिले पंजाब में हरिजनोद्धार का कार्य आरम्भ किया । यह 1899 की बात है जब कि महात्मा गांधी अभी दक्षिण अफ्रीका में थे । उन्होंने हरिजनों की एक जाति रहतियों को आर्यसमाज में प्रविष्ट किया । यह नई या निराली बात थी। सारे पंजाब में इस पर शोर मचा । पुराने विचारों के हिन्दू और सिख इसके विरोध पर तुल गये किन्तु महात्मा मुन्शीराम ने इस विरोध की किन्चितमात्र भी परवाह न की । हिन्दू बिरादरी ने आर्यसमाजियों का बहिष्कार कर दिया । कहारों ने उनका पानी भरना बन्द कर दिया, नाइयों ने उनकी जरूरत पूरी करने से इन्कार कर दिया । बिरादरी ने प्रत्येक रीति से उन्हें बहिष्कृत सिद्ध करने का यत्न किया । यह बहिष्कार जालन्धर व रोपड़ तथा अन्य स्थानों में हुआ । रहतियों के प्रवेश के साथ समस्त हरिजन जातियों के लिए आर्यसमाज

का द्वार खुल गया । मेरी जन्मभूमि गुजरांवाला की एक तहसील वजीराबाद है । वहां की आर्यसमाज में मेघों को अपने साथ मिलाया तो वहां की हिन्दू बिरादरी ने आर्यसमाजियों का पानी बन्द कर दिया । मेरी गली का कुंआ मेरी निजी सम्पत्ति था । मेरी बिरादरी के लोग मुझे तो पानी भरने से रोक न सकते थे, उन्होंने मेरे कुंए का बहिष्कार कर दिया । किन्तु बहिष्कार देर तक न चल सका । धीरे-धीरे आर्यसमाज ने हरिजनों की तमाम जातियों को अपनी गोद में ले लिया और आर्यसमाज से बाहिर कोई भी हरिजन न रहा । आर्यसमाज ने छुआछूत समाप्त कर दी थी ।

हरिजनोद्धार का कार्य बड़ा विकट है । कई शताब्दियों से सुधारक तथा महात्मा लोग छुआछूत के विरुद्ध प्रचार करते आए हैं किन्तु वह इस समय तक मिट नहीं सकी । और वह मिट भी नहीं सकती जब तक कि जन्म पर आश्रित जाति पांति की अंत्येष्टि न हो जाय । आर्यसमाज छुआछूत को समाप्त करने के लिए कुछ काम कर पाया तो इसलिये कि वह जन्म पर आश्रित जाति के विरुद्ध है और गुण, कर्म के आधार पर वर्ण मानता हैं । महात्मा मुन्शीराम को यह श्रेय भी प्राप्त है कि पंजाब में सबसे पहले उन्होंने जन्म की जात पांत को तोड़कर अपनी कन्या का विवाह किया । इस पर उनका घोर विरोध हुआ । हिन्दू बिरादरी की ओर से ही नहीं अपितु आर्य पुरुषों की ओर से भी, जिन्होंने यह समझा कि अभी इस सुधार का समय नहीं आया । वे भूल गये कि सुधार का समय स्वयं नहीं आया करता, उसे विशेष पुरुष लाया करते हैं । जन्म की जातिपांति का विरोध उतना ही कठिन था जितना कि छुआछूत का किन्तु दोनों के विरोध में क्रियात्मक पग उठाने का श्रेय महात्मा मुन्शीराम को प्राप्त हुआ ।

फिर उन्हें यह श्रेय भी प्राप्त है कि उन्होंने वैदिक वर्ण व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए हरिद्वार में गंगा के तट पर गुरुकुल स्थापित किया। और अपने दोनों पुत्र हरिश्चन्द्र तथा इन्द्र को अपने साथ लेकर हरिद्वार चले गये । उन्होंने केवल इसके लिए वकालत ही न छोड़ी प्रत्युत अपनी सारी सम्पत्ति उसके अर्पण कर दी । उनके दोनों पुत्र सबसे पहले गुरुकुल के स्नातक होकर निकले । धर्मपत्नी के देहान्त पर वे एक प्रकार से वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करने लग गये थे । गुरुकुल आकर तो वास्तविक अर्थों में वानप्रस्थी हो गये । उन्होंने अपना सारा समय और सारी शक्ति गुरुकुल की सेवा में लगा दी और एक भिक्षु का जीवन व्यतीत करने लग गये । गुरुकुल कांगड़ी 1902 में स्थापित हुआ । 1918 में उन्होंने आश्रम मर्यादा को पूरा करने के लिए संन्यास ग्रहण किया और मुन्शीराम से श्रद्धानन्द बन गये । आश्रम मर्यादा को पूर्ण करने का श्रेय भी उन्हें ही प्राप्त हुआ ।

*(शेष पृष्ठ 15 पर)*

# डीएवी आन्दोलन : ज्ञान एवं विज्ञान का समन्वय

–स्व० 'पद्मभूषण' श्री सूरजभान

*[ लाला सूरजभान का जन्म १ नवम्बर १९०४ को उत्तरपश्चिमी सीमान्त प्रान्त के डेरा इस्माइल खां के टांक नामक ग्राम में हुआ । आपकी शिक्षा डी० ए० वी० कॉलेज लाहौर, गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर और लन्दन विश्वविद्यालय के इस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग में हुई । आपने डी० ए० वी० कॉलेज लाहौर और डी० ए०वी० कॉलेज शोलापुर में अध्यापन किया, डी० ए० वी० कॉलेज जालंधर के प्रिंसिपल रहे, कुरुक्षेत्र और पंजाब विश्वविद्यालयों के कुलपति रहे । आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा और डी० ए० वी० कॉलेज कमिटी के प्रधान रहे । २८ अगस्त १९८० को आपका निधन हुआ ।*

*प्रस्तुत लेख में ज्ञान और विज्ञान के समन्वय के प्रति डी० ए० वी० आन्दोलन की प्रतिबद्धता को शब्दबद्ध किया गया है । –सम्पादक ]*

महर्षि स्वामी दयानन्द एक ऐसे समय में भारत का उद्धार करने आए जबकि हमारा देश विदेशियों के चंगुल में फंसा हुआ था । उस समय प्रत्येक नर-नारी देश की दशा पर दो अश्रु अवश्य बहाता था परन्तु भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म और समाज की उन्नति की ओर पूरा ध्यान नहीं दिया जा रहा था । ऐसी स्थिति को उस समय एक दूरदर्शी और मन्त्रद्रष्टा ऋषि ने ही अपने चिन्तन से भली प्रकार समझा था और अपना सर्वस्व समर्पण करके सांस्कृतिक पुनरुत्थान का महान् कार्य आरम्भ किया था । किन्तु देव को यह भी स्वीकार न हुआ । विद्वेषियों के विष ने महर्षि की जीवन-लीला समाप्त कर दी । उनकी मान्यताएं, उनकी धरणाएं और भारत की स्वतन्त्रता के बाद आने वाली समस्याओं के सभी समाधान अधूरे रहे गए ।

देव दयानन्द की सुगन्धित वाटिका को हराभरा रखने और उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का प्रश्न ऋषि भक्तों के समक्ष विकट समस्या बन खड़ा हुआ था । भिन्न-भिन्न प्रस्ताव सामने आये । आखिर अन्धकार की बेला में एक प्रकाश किरण आकर खड़ी हो गई । अपना यौवन और सर्वस्व समर्पण करने वाले वे महात्मा थे हंसराज, जो एक ऋषि की दृष्टि लेकर अवतरित हुए। उन्होंने उस समय की परिस्थितियों का बड़ी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से निरीक्षण और परीक्षण किया । वह यह भली प्रकार समझ गए थे कि चारों ओर फैली अंग्रेजियत में केवल भारतीय संस्कृति के गीत गाने से ही कुछ न बनेगा । अंग्रेज के पैर इतनी मजबूती से जम चुके हैं कि उन्हें केवल शाब्दिक विवाद द्वारा ही नहीं उखाड़ा जा सकेगा । इस कार्य के लिए कुछ रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा । साथ ही महर्षि दयानन्द की मान्यताओं को

जनसामान्य तक पहुंचाने का सरल और प्रभावी साधन भी केवल शिक्षण संस्थाएं ही उपयुक्त प्रतीत हुआ । अंग्रेजों ने सारे भारत में मिशन स्कूल और कॉलेजों का जाल बिछा दिया था । उन्हीं के माध्यम से भारतीय युवा-मस्तिष्क को पूरी तरह अभारतीय बनाया जा रहा था । तत्कालीन युवक अपना गौरवशाली अतीत भूलता जा रहा था । भारतीय इतिहास और संस्कृति को विकृत रूप से प्रस्तुत किया जा रहा था । भारतीय युवा-पीढ़ी में अपनी संस्कृति के प्रति हीनता और उपेक्षा की भावना को जगाया जा रहा था । इस स्थिति का प्रतिकार आवश्यक था। इसीलिए ऋषि भक्तों ने एंग्लो पद्धति को साथ लेकर उसी के माध्यम से वैदिक मान्यताओं को युवा मस्तिष्क में बैठाने के लिए डीएवी आन्दोलन का सूत्रपात किया । महात्मा हंसराज और उनके पश्चात् अनेक युवकों ने इसी कड़ी को जीवित रखने के लिए जीवन दान दिया । भारतीय शिक्षा के सन्दर्भ में डीएवी आन्दोलन की भूमिका पर विचार करते समय हमें पिछली एक शताब्दी में बदलते मानव-समाज पर एक दृष्टि डालनी होगी ।

जवानी मनुष्य के जीवन का सर्वोत्तम काल है । जवान आदमी में नई चीजों को जानने और कुछ कार्य करने की तीव्र भावना होती है । बुढापे में यह भावना मर जाती है । बूढ़े लोगों की बातें सुनिये । 'ऐसा था, वैसा था' का ही बोलबाला रहता हे । जवान आगे देखते हैं बूढे पीछे लौटना चाहते हैं क्योंकि आगे उनके लिए खतरा है । यही कारण है कि संसार को आमतौर पर जवान ही बदलते हैं । घनत्व, आकर्षण, सापेक्षता आदि के क्रान्तिकारी वैज्ञानिक आविष्कार जवानों ने ही किये थे । विकासवाद, साम्यवाद, अचेतनवाद आदि सिद्धान्तों के जन्मदाता भी जवान चिन्तक थे । भारत को बदलने वाले बुद्ध, शंकराचार्य, दयानन्द, गांधी आदि सभी महात्माओं ने अपने सिद्धान्त जवानी में ही स्थिर किये थे ।

डीएवी आन्दोलन का सम्बन्ध इन्हीं जवानों में से एक के साथ है । दयानन्द ऐंग्लो-वैदिक संस्थाओं के ये प्रेरणा-स्रोत स्वामी दयानन्द हैं । उनमें युगान्तरकारी युवक की सभी विशेषताएं प्रभूत मात्रा में विद्यमान थीं । बचपन में जिज्ञासा से प्रेरित होकर उन्होंने मूर्तिपूजा का अंधविश्वास छोड़ दिया । यही जिज्ञासा उन्हें सम्पन्न घर के सुख-साधन छुड़वाकर पहाड़ों और जंगलों में ले गई । इस जिज्ञासा ने उन्हें महंताई के प्रलोभन और मृत्यु की कामना से बचाया। इसी जिज्ञासा से प्रेरित होकर उन्हें मुर्दे की चीर-फाड़ की यह जिज्ञासा यश की पराकाष्ठा पा लेने पर भी यथावत बनी रही । 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका में उन्होंने विनयपूर्वक भूल-चूक जताने वालों को वचन दिया कि 'जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा ।' बलिदान और दृढ़ता के तो वे मानो अवतार थे।

मौत के भय ने भी उन्हें कभी अपने मार्ग से विचलित नहीं किया । बचपन में अपनों की मौत देख कर कांपे थे, जवानी में कफन बांध कर घूमने लगे । अन्त समय में मारने वाले को भी माफ कर दिया ।

सत्याग्रह और परोपकार उनके जीवन के मूलमन्त्र थे । मनुष्य-मात्र की हितकामना से सत्य का अन्वेषण और प्रचार करने में उन्होंने अपना जीवन होम दिया । इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की । आर्यसमाज के दस नियमों में ईश्वर और वेद के बाद सत्य और परोपकार पर बल हैं । सत्य के आग्रह से ही अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि का नियम बनाया गया । डीएवी आन्दोलन मुख्यतः इस आठवें नियम की प्रेरणा का फल है । डीएवी स्कूल और कॉलिज १८८६ से भारतीय जनता में सच्ची विद्या का प्रचार कर रहे हैं । देश का विभाजन हो जाने पर इस संस्था के कार्य में अनेक बाधाएं आ गईं थीं परन्तु कार्यकर्त्ताओं के तप और त्याग से उसने पुनः शक्ति प्राप्त की । आज देश भर में इस संस्था के आधीन ३२ कॉलिज, १४ तकनीकी या व्यावसायिक संस्थान, ७३ उच्च या उच्चतर विद्यालय एवं ३८ आदर्श या प्राथमिक विद्यालय चल रहे हैं । उल्लेखनीय है कि उड़ीसा के पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों में भी इसकी गतिविधियां प्रारम्भ हो गई हैं ।

ऐंग्लो वैदिक शब्द ज्ञान की समन्वयात्मक प्रक्रिया के सूचक हैं । यह समन्वय की भावना भारतीय संस्कृति की आत्मा है । इसे पहचाने बिना भारतीय संस्कृति का मर्म जानना संभव नहीं है । संस्कृति का अध्ययन करने वाले लोग जानते हैं कि भरतीय दर्शन, धर्म, साहित्य, संगीत, कला और जीवन-व्यवहार आदि सभी में समन्वय के अद्‌भुत उदाहरण मिलते हैं । स्वयं स्वामी जी ने धार्मिक परम्पराओं की आलोचना में वैज्ञानिक दृष्टि का समन्वय किया था । वैदिक और वैज्ञानिक ज्ञान के ऐसे समन्वय का स्वप्न ही डीएवी आन्दोलन के मूल में है । ऐंग्लो शब्द उस ज्ञान-सम्पत्ति का सूचक है जिसे हमारे रहनुमा अपने आंग्ल समकालीनों से प्राप्त करना चाहते थे। इसे दोहराने की आवश्यकता नहीं कि मुट्ठी भर अंग्रेज वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की शक्ति लेकर ही भारत जैसे विशाल और सम्पन्न देश पर हावी हो सके थे । हमारे देशी राजाओं ने अपनी अदूरदृष्टि के कारण शिक्षा की लगभग उपेक्षा कर दी और फलतः ज्ञान की शक्ति हमारे हाथ में नहीं रही । इसीलिए नये भारत के सभी निर्माता इस नये ज्ञान की शक्ति को प्राप्त करने के पक्षपाती थे । अंग्रेज अपनी कूटनीति के कारण हमें अंग्रेजी भाषा तो सिखाना चाहते थे परन्तु वैज्ञानिक ज्ञान देने में कंजूसी करते थे । स्वामी जी के समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जैसे राष्ट्रनेता ने १८७२ के आसपास तकनीकी ज्ञान के प्रसार की आवश्यकता पर बल देना आरम्भ कर दिया था । राष्ट्र की इसी

आवश्यकता की पूर्ति का संकल्प दयानन्द ऐंग्लो वैदिक संस्थाओं ने लिया ।

इस समन्वय-संकल्प की आवश्यकता आज भी ज्यों की ज्यों बनी हुई है । उस समय वैदिक ज्ञान के साथ वैज्ञानिक ज्ञान का योग आवश्यक था । आज वैज्ञानिक ज्ञान में वैदिक ज्ञान का पुट चाहिए । आज विश्व भर में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का विस्फोट हो गया है । पहले जितना ज्ञान सदियों में बढ़ता था, आज उतना महीनों में बढ़ रहा है । ज्ञान के इस विकास की गति उत्तरोत्तर बढ़ रही है । पश्चिम ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण धर्म और कलाओं की उपेक्षा कर दी थी । आज वहां के चिन्तक धर्म और विज्ञान की दो संस्कृतियों का समन्वय करने को बेचैन होने लगे हैं ।

ऐंग्लो-वैदिक समन्वय की प्रक्रिया चलती रहनी चाहिए । ज्यादा बेहतर होगा यदि कहूं कि और तेजी से चलनी चाहिए । पहले वैज्ञानिक ज्ञान लाने के लिए ही प्रयत्न की आवश्यकता थी । वैदिक ज्ञान प्रायः सहज उपलब्ध था। आज इस समन्वय की आवश्यकता दो धरातलों पर है । पिछड़े क्षेत्रों में वैज्ञानिक ज्ञान पहुंचाना है । अपेक्षया विकसित समाजों में अर्थात् नगरों और महानगरों में उपेक्षित वैदिक ज्ञान को पुनः स्थापित करना है । समन्वय की यह दोहरी मांग युवकों के लिए चुनौती है । जिस साहस और धैर्य से दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द और हंसराज जैसे युवा महात्माओं ने अपने समय की चुनौती स्वीकार की थी उसी की प्रतीक्षा आज भी बनी हुई है ।

क्या यह मान लें कि उस समय की जवानी जाग रही थी और आज की जवानी सो गई है ? आजादी के कुछ देर बाद तक ऐसा लगा था कि सचमुच सो गई है । इधर कुछ समय से उसने फिर अंगड़ाई ली है । विध्वंस के स्थान पर सृजनात्मक शक्तियाँ सक्रिय होने लगी हैं । राष्ट्र के नव-निर्माण के लिए युवा पीढ़ी में एक नया उत्साह आया है । आर्यसमाज और डी० ए० वी० आन्दोलन इन सृजनात्मक शक्तियों को जगाने और उचित मार्ग पर लगाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे हैं । इसी प्रयत्न में उनकी सार्थकता है । एक कवि के शब्दों में कहना चाहूंगा–

वेद की वाणी कि हो आकाशवाणी
धूल है जो जग नहीं पायी जवानी ।

स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज, महर्षि दयानन्द की दो भुजायें थीं इन दोनों महापुरुषों ने अपने-अपने क्षेत्र में शिक्षा एवं समाज सुधार में प्रशंसनीय कार्य किये और शिक्षा-पद्धति को एक ऐसा मोड़ दिया कि आज भी संसार में आर्यसमाज की संस्थाओं का एक विशेष महत्व है परन्तु अब समय आ गया है कि दोनों पद्धतियों का आपस में समन्वय होना अत्यन्त आवश्यक है ताकि आज की युवा पीढ़ी को एक नई दिशा प्राप्त हो सके। ●

# स्वामी श्रद्धानन्द जी की बर्मा यात्रा

–स्व० डॉ० ओ३म् प्रकाश ( रंगून वाले )

*[ डॉ० ओ३म् प्रकाश का जन्म माण्डले ( बर्मा ) में सन् 1912 में हुआ था । आप की प्रेरणा से ही "सत्यार्थप्रकाश" का बर्मी भाषा में अनुवाद हुआ। आपका निधन दिल्ली में सन् 1998 में हुआ । –सम्पादक ]*

सन् 1919-20 में पूज्य श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ब्रह्मदेश पधारे । मुख्य उद्देश्य गुरुकुल कांगड़ी के लिए धन संग्रह करना था । परन्तु उसी बहाने ब्रह्मदेश के आर्य हिन्दुओं को उनके दर्शन व उपदेशों से लाभान्वित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ । व्यस्त होने के कारण वे ब्रह्मदेश के अनेक नगरों में न जा सके थे, केवल रंगून और मांडले-दो मुख्य नगरों में ही उनका जाना हो सका । परन्तु बरमा की हिन्दू जनता ने इन दोनों शहरों में आकर इनके दर्शन का लाभ उठाया ।

रंगून आये तो वर्षाऋतु थी । उन दिनों भारत से बरमा आने का साधन जलपोत ( पानी पर चलने वाला जहाज ) ही था वायुयान की सुविधा तो संसार भर में कहीं नहीं थी । कलकत्ते से जहाज चलते थे और दिन-रात चलते हुए 72-73 घण्टों में रंगून पहुंचते थे । यात्रा बहुत असुविधाजनक नहीं थी । जिन्हें समुद्र यात्रा करते समय मिचलाहट (sea sickness) आदि न होती हो, उन्हें बहुत अच्छा लगता था । जहाज अकेला समुद्र की लहरों में डोलता उतरता चला जा रहा है, चारों ओर तहां तक दृष्टि जा रही है या जा सकती है, जल ही जल दीखता और क्षितिज पर समुद्र का छोर आकाश से मिल जाता था । यदि चांदनी रात हो-चन्द्रमा ही अकेला आपके पोत के साथ-साथ चलता दीखता था, वही एक साथी होता था इस यात्रा में । जहाज के यात्री 1000-1200 तक ही आप के साथ होते थे । इनमें से बहुतेरे तो डोलते जहाज में जी मिचलाना, उल्टी आदि से ग्रसित होकर पड़े रहते थे । ज्यादातर बर्मा में छोटी नौकरी या छोटे मोटे काम की तलाश में ये लोग आते जाते रहते थे, आने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था ।

स्वामी जी को लिये 'आरांकोला' जहाज रंगून की 'लुइस स्ट्रीट' जेट्टी पर आ रहा है । जनता की भीड़ स्वागत के लिए खड़ी है-हाथों में फूल मालायें लेकर लोग उचक उचक कर स्वामी जी के दर्शनों के लिए खड़े हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं । भीड़ में भारतीय हैं-स्त्री पुरुष, गृहस्थ हैं, बौद्ध साधु ( फोजी, सयाडौ ) वर्मी स्त्रियां हें । प्रातः काल के 9 बजे का लगभग समय है । आकाश में बादल छाये हुए हैं, सुन्दर वातावरण है । समुद्र तट पर

मन्द-मन्द वायु बह रही है । पोर्ट के अधिकारियों ने स्वामी जी को सम्मानपूर्वक-शेष यात्रियों से पहले ही उतरने की अनुमति दे दी । स्वामी जी धीरे-धीरे (gangway) सीढ़ी पर से उतर कर मुख्य मार्ग तक आये । स्वागतार्थ लोगों में बर्मा के स्वनाम धन्य भिक्षु प्रवर सयाडौ ऊ उत्तम भी हैं। आर्यसमाज रंगून के प्रधान श्री सुभाष हल्कर तथा डॉ० गुरुदत्त सरीन तथा श्री आत्माराम जी, श्री दरियामल जी, श्री रामरखा मल जी, हिन्दू समाज के नेता श्री राजा रेडियर भी हैं-सब ने चरणस्पर्श कर प्रणाम किया-स्वामी जी ने हाथ उठाकर, फिर हाथ जोड़कर नमस्ते की । सबको आशीर्वाद दिया ।

अब मुख्य सड़क की ओर आना था । जहाज से जेट्टी की मुख्य-सड़क, स्ट्रैण्ड कोई सौ गज ही होगा, वहां मोटरें खड़ी थीं । स्वामी जी बढ़ते हैं तो देखते हैं और देखकर स्तंभित हो जाते हैं । यह क्या ? उनके जाने के पथ के दोनों ओर बर्मी महिलायें बैठी हैं तथा सामने पथ पर वे झुक जाती हैं । माथा भूमि से लगा है और उनके खुले केश सामने ही पृथ्वी पर फैले हैं । दोनों ओर की महिलाओं ने उस पथ पर अपनी केश राशि फैला कर पथ को पूरा ढक दिया है । यह अनूठा अभूतपूर्व दृश्य पहले कभी न देखा था और न बाद को देखा गया, वह भी एक भारतीय संन्यासी के लिए । स्वामी जी झिझके, कि महिलाओं के सिर के बालों की चादर पर कैसे पैर रखें । भिक्षु उत्तम ने उन्हें समझाया कि वह वर्मी स्त्रियों द्वारा किसी महत्तम संन्यासी को सम्मान प्रदर्शन करने का सबसे बड़ा तरीका है और इसके द्वारा वे पुण्य लाभ करने की आशा रखती हैं । स्वामी जी ने धीरे-धीरे लम्बे पग बढ़ा कर चलना आरम्भ किया। वे ऐसी सावधानी से चल रहे थे मानों कोई अंगारों पर चल रहा हो ।

स्वामी जी ने दिल्ली के जामा मस्जिद के मिम्बर पर से भी वेद मन्त्रों के गान से उपदेश दिया । यह उनके जीवन की एक महत्वपूर्ण तथा न भूतो न भविष्यति घटना बताई जाती है । परन्तु रंगून की बर्मी समाज तथा गृहस्थियों द्वारा प्रदर्शित यह सम्मान अपनी सानी नहीं रखता । कहना न होगा जो स्वामी जी के साथ चलने वाली जनता ने पथ की दोनों ओर के मार्ग को पार किया। स्वामी जी के साथ ऊ उत्तमा ही धीरे धीरे मोटर तक आये और कार में बैठ कर स्वामी जी सेठ प्राण जीवन मेहता की कोठी पर गये जो कि खेडोगों पगोड़ा रोड पर थी । बाद को महात्मा गांधी भी 1929 में इसी भवन में ठहरे थे ।

स्वामी जी की अनेक संस्थाओं ने सार्वजनिक सम्मान दिया तथा उनकी सेवा में गुरुकुल के लिए सब ने ही अपनी-अपनी आहूति दी । आर्यसमाज रंगून के पुराने दो मंजिले मकान के सभागार में एक छोटा सा मैदान था । इसमें एक सांयकालीन सभा हुई । स्वामी जी का उपदेश हुआ । बर्मा के दानवीर राणा बैजनाथ सिंह जी अध्यक्ष थे । इसी सभा में इन्होंने 5 हजार की

धनराशि प्रदान की । राजारेडियार (एक तेलगू धनाढ्य) ने सम्मानपूर्वक साष्टांग दण्डवत प्रणाम कर एक लिफाफा स्वामी जी के चरणों में रखा । इसमें दस हजार रुपये थे ।

रंगून के पश्चात् श्री स्वामी जी माण्डले पधारे । वहां सेठ ईश्वर दास डॉ० गणेश दास, डॉ० देवीचन्द शर्मा आदि व्यक्तियों ने स्वागत किया । मांडले स्थित डीएवी स्कूल में भी गये । माण्डले निवासियों ने एक बड़े भव्य मण्डप में सार्वजनिक सभा की व्यवस्था की गयी । लेखक उस समय तीसरी कक्षा का विद्यार्थी था । उसे स्मरण है कि उस सभा में उसने एक अन्य मित्र के साथ एक कण्ठस्थ किया हुआ संवाद सुनाया था और उसके बाद स्वामी जी ने अपनी कुर्सी से उठ कर दोनों के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दिया था।

श्री स्वामी जी इस यात्रा से जहां गुरुकुल को आर्थिक सहायता प्राप्त करा सके, वहां ब्रह्म देश की जनता में धार्मिक जागृति तथा संगठन को भी सबल किया । उनकी स्मृति रंगून के पुराने लोगों में बनी हुई है । ●

---

*(पृष्ठ 8 का शेष)*

1918 में उन्होंने सन्यास धारण किया और 1919 में वे राजनैतिक क्षेत्र में कूद पड़े तथा महात्मा गांधी जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश की सेवा करने लगे । महात्मा गांधी ने रोलट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह जारी किया। परिणामतः प्रजा पर बड़ा अत्याचार हुआ । पंजाब पर मार्शल लॉ लगा दिया। जनरल डायर की आज्ञा से जलियांवाला बाग में सैंकड़ों निहत्थे स्त्री पुरुष पर गोली चलाई गई जिससे सैंकड़ों व्यक्ति मारे गये । वहां स्वामी श्रद्धानन्द ने उनके निस्सहाय परिवारों के लिये आर्थिक सहायता की । पंजाब ने उनका उपकार माना । और 1919 के दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में कांग्रेस का जो अधिवेशन अमृतसर में हुआ उसकी स्वागत समिति का अध्यक्ष उन्हें बनाया ।

उन्हें जीवन में इतने श्रेय प्राप्त हुए जितने कि किसी भी मनुष्य को प्राप्त न हुए होंगे । 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नामक एक व्यक्ति ने जो यह कहकर उनके पास आया था कि वह उनसे धर्मचर्चा करना चाहता है, उन पर गोली चला दी । उस समय वे रोग शैय्या पर लेटे हुए थे । निमोनिया के रोग ने उनपर आक्रमण कर रखा था । उन्हें एक शहीद अथवा हुतात्मा की मृत्यु प्राप्त हुई । और इस प्रकार उनका यश तथा कीर्ति अपनी पराकाष्ठा तक पहुंच गया । जिस समय रोगी श्रद्धानन्द पर गोली का वार हुआ उस समय आसाम की राजधानी गोहाटी में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था । स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान का समाचार सुनकर अधिवेशन में ये शब्द कहे गये–

A glorious end to a glorious career. अर्थात् जैसा शानदार स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन था वैसी ही शानदार उनकी मृत्यु हुई । ●

# पुस्तक समीक्षा

## डॉ० वेदप्रकाश का वैदिक साहित्य

*गतांक से आगे–*

6. **ईश्वर उपासना विधि**—सुधी विद्वान लेखक प्रो० वेदप्रकाश जी ने इस पुस्तक में संध्या हवन का महत्व, वैदिक नित्यकर्म, स्वाध्याय, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्व देव यज्ञ, अतिथि यज्ञ आदि विषयों का सहज, सरल, सुबोध भाषा शैली में सुष्ठु विवेचन किया है । आपने वेदमन्त्रों के काव्यानुवाद भी किए हैं । आपने विभिन्न अवसरों पर बोले जाने वाले मंत्र भी संग्रहीत किए हैं । अन्त में ईश्वर प्रार्थना और भक्ति गीत दिए गए हैं तथा ऋतु अनुकूल सामग्री, यज्ञ के लिए आवश्यक वस्तुएं, विवाह संस्कार के लिए आवश्यक वस्तुएं आदि भी परिगणित की है । यह पुस्तक दैनिक कार्यों में बहुत ही उपयोगी है ।

7. **महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज और हम**—इस लघु पुस्तिका में सुधी चिन्तक, विचारक, लेखक, गवेषक प्रो० वेदप्रकाश जी ने भावपूर्ण शैली में महर्षि दयानन्द सारस्वती के द्वारा किए गए कार्यों का विवरण दिया है । महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज के अनुयायिओं ने, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए अनेक उपयोगी कार्य किए हैं । आवश्यकता है कि हम अपने इस सुपथ से विचलित न हों तथा वेद और ऋषिवर के मन्तव्यों का अहर्निश प्रचार करें तथा उन मन्तव्यों को अपने जीवन व्यवहार में लाएं । सुधी लेखक ने आर्यसमाज राष्ट्र और विश्व के कल्याण के लिए, ठोसकार्य करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं । यदि सभी आर्यजन संगठित होकर, सद् विचार पूर्वक योजनाबद्ध ढंग से कार्य करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी ।

8. **सूर्योदय**—इस काव्य कृति में 301 कविताएं हैं । डॉ० वेदप्रकाशजी कवि हैं । वे सहृदय हैं । वे संवेदनशील हैं । वे परोपकार परायण हैं । वे ईश्वर भक्त हैं । वे वेद के अनुयायी हैं । वे महर्षि दयानन्द सरस्वती को अपना आदर्श पुरोधा मानते हैं । वेदमन्त्र में वर्णित सूर्योदय की महत्ता को हृदयंगम करके उन्होंने इस काव्य कृति की रचना की है ।

उत सूर्यो दिव एति पुरो रक्षांसि निजूर्वन ।
आदित्यः पर्वतेभ्यां विश्व दृष्टो अदृष्टहा ॥

अथर्ववेद 5.52.1.

लेखक ने स्वयं 'सूर्योदय' लिखने का उद्देश्य यही बताया है कि सुहृद पाठक सांसारिक जीवन के सत्य को जानकर परमेश्वर पर विश्वास करने वाले पक्के उपासक बनें तथा अपने जीवन में आनेवाले दुःख, दोष, दुर्गुण

और दुर्व्यसनों से मुक्त हो सकें। सभी गीतगेय हैं। ये वैदिक सिद्धान्तों से अनुप्राणित हैं। वे कहते हैं–

जग हितकारी कर्म करो कुछ, वेदों का कुछ ज्ञान करो।
मानव बनकर जीना सीखो, परमेश्वर का ध्यान करो॥

9. पञ्च महायज्ञ–सुधी वैदिक विद्वान् प्रो० वेदप्रकाश ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रणीत ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ, अतिथि यज्ञ, एवं सत्संग विधि का संकलन एवं सम्पादन किया है। इस पुस्तक में विद्वान लेखक एवं सुकवि ने रचयिता भक्ति गीत भी संकलित किए हैं। यह पुस्तक निश्चय ही प्रतिदिन संध्या हवन करने तथा उन्हें कण्ठस्थ करने में उपयोगी होगी तथा भक्ति गीतों का गायन करने से आत्मिक आनन्द की अनुभूति होगी।

10. प्राणायाम–सुधी वैदिक विद्वान् प्रो० वेदप्रकाश जी ने इस पुस्तक में प्राणायाम के महत्व का प्रतिपादन किया है। वैदिक साहित्य में प्राणायाम के लाभ इस प्रकार बताए गए हैं–रोगों का नाश एवं आरोग्य की प्राप्ति सर्वसुखों की प्राप्ति, दु:खों से रक्षा, मोक्षानन्द की प्राप्ति, सुखों की प्राप्ति और दु:खों का नाश शारीरिक आत्मिक और सामाजिक बल की प्राप्ति, ईश्वर भक्ति में स्थिरता, पाप वासनाओं पर विजय, सद्बुद्धि की प्राप्ति। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थों में वर्णित लाभों का भी समावेश लेखक ने किया है। लेखक ने केवल सैद्धान्तिक पक्ष का ही विवेचन नहीं किया अपितु व्यवहार पक्ष पर भी समुचित ध्यान दिया है। उन्होंने प्राणायाम का विभिन्न विधियां भी बताई है आयुर्वेद की दृष्टि से प्राणायाम का महत्व बताया है। भक्ति गीतों ने पुस्तक को उपयोगी बना दिया है।

## आर्यसमाज नांगलराया, नई दिल्ली की स्मारिका

*मुख्य सम्पादक :* श्री भगवानदास, डॉ० जयदेव वर्मा, श्री प्रतिपाल सिंह
*प्रकाशक :* आर्यसमाज नांगलराया नई दिल्ली-110046

श्री भगवानदास जी आर्य, सुधी वैदिक विद्वान् हैं। आप लम्बे समय तक नई दिल्ली नगर पालिका द्वारा प्रकाशित 'पालिका समाचार' ( हिन्दू, उर्दू, पंजाबी ) के सम्पादक रहे। श्री भगवानदास जी स्वयं भी इस आर्यसमाज से 1953 से जुड़े हैं अत: उनको गांव के इतिहास की तथा आर्यसमाज के इतिहास की तथा आर्यसमाज के विभिन्न प्रकल्पों की पर्याप्त जानकारी है।

अन्य आर्यसमाजों को भी इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि समय पर वे भी अपनी आर्यसमाज का इतिहास तैयार करें। इससे आर्यसमाज के सदस्यों में जागृति आएगी। वे अपने इतिहास को, तथा पूर्वजों के प्रमुख कार्यों से प्रेरणा लेंगे तथा आर्यसमाज के कार्यों के प्रति निष्ठापूर्वक समर्पित होंगे, एवं

आर्यसमाज के कार्यों के प्रति संलग्नता अनुभव करेंगे । यह निर्विवाद है कि अपना पूर्व गौरव जानने की सभी की इच्छा होती है ।

नांगलराया गांव-अतीत एवं वर्तमान के अन्तर्गत आपने गांव की पृष्ठभूमि आदि विषयों के अन्तर्गत भी गांव के गौरव तथा राजनैतिक सामाजिक, शैक्षिक क्षेत्र में यहां के निवासियों के योगदान का उल्लेख किया है । आपकी 'जयति वेद' अनुपम कविता तो वास्तव में सरस है ही, स्मरणीय भी है । आपने गांव की दिवंगत एवं वर्तमान विभूतियों के विषय में हृदय स्पर्शी तथा हृदयग्राही लेख दिए हैं । नांगलराया के प्रबुद्ध साहित्यकारों का जीवन कृत तथा उनके योगदान के विषय में उल्लेख निश्चय ही प्रेरणादायी हैं । आर्यसमाज नांगलराया के 72 वर्ष के अन्तर्गत आने इस आर्यसमाज की स्थापना से लेकर आज तक का विस्तृत वर्ष रोचक शैली में प्रस्तुत किया है । प्रबुद्ध आर्यजनों के संस्मरणात्मक लेख भी आपने दिए हैं ।

आपका यह प्रयास सराहनीय है । निश्चय ही यह प्रकाशन अन्य आर्यसमाजों के अधिकारियों को भी प्रेरणा देगा । ●

## स्वामी श्रद्धानन्द

–योगाचार्य रमाकान्त मिश्र

जय ऋषि दयानन्द के महावीर,
श्री श्रद्धानन्द तुम्हें अभिनन्दन है ।
जय गुरुकुल के गुरु प्रसून,
सुरभित तुम से जग का कण कण है ॥
जय योग साधना की तपोमूर्ति,
आलोकित तुम से तन मन है ।
जय आत्मोदय के दिव्य सूर्य,
आत्मोदय योगाश्रम करता वन्दन है ॥
बलिदानों के पथ पर चलकर,
जो करता मृत्यु वरण है ।
उस बलिदानी मृत्युंजय को,
मेरा शत शत बार नमन है ॥
शत शत बार नमन है तुम को,
तुम से गीतों को मिला चरण है ।
योगक्षेम की अब क्या चिन्ता,
जब योगेश्वर के मन हुआ शरण है ॥

आर्यसमाज : चिन्तन-अनुचिन्तन - 32

# राष्ट्रनिर्माण और युवक

-स्व० डॉ० प्रशान्तकुमार वेदालंकार

*[ डॉ० प्रशान्त कुमार वेदालंकार का जन्म २१ दिसम्बर १९३७ को मुजफ्फरगढ़ जिले के सीतापुर गांव में हुआ । आप की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी और दिल्ली विश्वविद्यालय में हुई । आप हंसराज कॉलेज दिल्ली में हिन्दी प्राध्यापक रहे । आपने वैदिक साहित्य में नारी, धर्म का स्वरूप, जीवन के पांच स्तम्भ आदि महत्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थों का प्रणयन किया । प्रस्तुत लेख में आपने युवकों को राष्ट्र निर्माण के लिए सन्नद्ध होने की प्रेरणा दी है । -सम्पादक ]*

आर्यसमाज के उत्साही युवकगण ! बहुत दिनों से आपको सम्बोधित करने की सोच रहा था, पर मन में एक संकोच था । संकोच यह कि मेरी बात का प्रभाव आप पर पड़ भी सकेगा या नहीं ?

मेरे संकोच का मुख्य कारण यह है कि मैं जो कुछ कहूंगा, उसका आदर्श रूप आपको कहां से दिखाऊंगा ? आज देश में ही नहीं, पूरे विश्व में मुझे एक भी ऐसा आदर्श व्यक्तित्व दिखाई नहीं दे रहा, जिसे दिखाकर मैं कहूं कि तुम ऐसे बनो । मुझे संकोच इस बात का है कि मेरी बात को निराधार न मान लिया जाए ।

जब मेरे देश पर मुगल और पठान अत्याचार कर रहे थे, तो सन्त तुलसी ने जन्म लिया, जिसने मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्र का गान किया और हिन्दू जाति को सत्यमार्ग पर टिके रहने में सहायता की । तभी निर्गुणी नानक व कबीर ने अद्वैत का अवलम्ब लेकर उस समय समाज में व्याप्त अन्धविश्वासों और कुरीतियों पर आघात किया । सूर ने भक्ति और वात्सल्य की ऐसी सरिता प्रवाहित की जिससे देशवासियों पर अमिट प्रभाव पड़ा । महाराणा प्रताप, शिवाजी, वीर बन्दावैरागी, हकीकतराय, गुरुगोविन्द सिंह किस-किस का नाम गिनाऊं-इन्होंने उन आततायियों के विरोध में अपने प्राणों की दीवार खड़ी कर दी । मर गये, पर झुके नहीं । अंग्रेजों के आने के बाद एक नयी दास-वृत्ति देश पर छाने लगी । नयी सभ्यता की चकाचौंध दिखाकर अंग्रेज मेरे देशवासियों को अपने चातुर्य से अपने रंग में रंगने लगे । उस समय स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, गोखले, बालगंगाधर तिलक, स्वामी श्रद्धानन्द, अरविन्द और गांधी का जन्म हुआ-इन्होंने देश में न केवल स्वतन्त्रता की मशाल जलाये रखी, भारतीयों को कभी इन्होंने मन से पराधीन नहीं होने दिया । तभी प्रारम्भ हो गयी कुछ बलिदानियों की परम्परा ।

तुम जिस महर्षि दयानन्द की सन्तान हो, उसकी अमर संस्था आर्यसमाज ने एक-एक करके ऐसे वीर जने, जिन्होंने देश को आजाद कराके ही सांस

ली । श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा ने विदेश में इन्डियन होम रूल लीग की स्थापना करके वैदिक संस्कृत का प्रसार विदेशों तक में किया । लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, भाई परमानन्द, सरदार अजीत सिंह, मदन लाल ढींगडा, रामप्रसाद बिस्मिल, गेंदालाल, रोशन सिंह, सरदार भगत सिंह, चौ० मुख्त्यार सिंह, हरविलास शारदा आदि-आदि–ऐसे सहस्त्रों वीर युवकों की तब लड़ियां बिछ गयीं थी भारत मां के कण्ठ में ।

तो आइये, हम किसी वर्तमान आदर्श व्यक्तितत्व की प्रतीक्षा छोड़कर अपने पूर्वजों से प्रेरणा प्राप्त करें । याद रखो, वही देश और वही जाति और समाज जीवित रहते हैं जो अपने अतीत से प्रेरणा प्राप्त करते हैं । जिन्हें अपने पूर्वजों पर, अपने पूर्व महापुरुषों पर गर्व होता है। जो अपने प्राचीन इतिहास का स्मरण करते हैं वे अपने वर्तमान और भविष्य को भी संवारने का संकल्प कर लेते हैं । हमारा अतीत इतना महान् है कि वह हमारे लिए संजीवनी शक्ति का काम कर सकता है ।

आज हमारे समाज में सर्वत्र, भय आशंका, शारीरिक व मानसिक दुर्बलता, नपुंसकता ही दृष्टिगत होती है । एक भेड़चाल है, जो शोषण, उत्पीड़न, मारण, उच्चाटन की ओर अन्धाधुन्ध बढ़ रही है । व्यक्ति को न शारीरिक सुख है, न मानसिक शान्ति । वह भटक रहा है । उसे कोई मार्ग सूझ नहीं रहा । उसका जीवन दूभर है ।

हमको इन्हीं विषम परिस्थितियों में किसी उत्कृष्ट मार्ग का अन्वेषण करना है । यदि हम सबल हैं तो विषम परिस्थितियां हमारा बाल भी बांका नहीं कर सकतीं । हम परिस्थितियों के दास क्यों बनें ? हम क्यों न परिस्थितियों की बेड़ियों को तोड़कर स्वयं ही आगे बढ़ें और शेष समाज को भी अपने पीछे चलाएं । याद रखो, तुममें वीरता है, तुममें ऊंचा चरित्र है, ज्ञान की किरण तुम में व्याप्त है । स्वयं भी प्रकाशित हो और दूसरों को भी प्रकाश प्रदान करो ।

याद रखो, आज सारा विश्व ही भौतिकता की चकाचौंध, नास्तिकता और अनास्था के अन्धकार तथा साम्प्रदायिकता के उन्माद से ऊब चुका है । वह भारत की ओर मुंह उठाकर देख रहा है । उसे किसी आध्यात्मिक समाजवाद की खोज है । वह भूखा ही न रहे और मानसिक रिक्तता भी अनुभव न करे । विश्वास है कि भारत का समन्वयवादी दृष्टिकोण ही उसका एक मात्र त्राण कर सकता है ।

क्या तुम यह संकल्प लेते हो कि तुम पहले स्वयं अपना निर्माण करोगे, फिर अपने देश और जाति की सेवा में तत्पर हो जाओगे ? और अन्त में विश्व को सच्चा सुख व शान्ति का मार्ग दिखलाने में जुट जाओगे ? ●

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं०17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 ( फोन-22081646 ) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया । न्यायक्षेत्र–दिल्ली ।